

“शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के मध्य संबंध: किशोरों के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”

Parul Dare

Babulal Tarabai Institute of Excellence Sagar, (M.P)

सार (Abstract)

यह विश्लेषणात्मक अध्ययन किशोरों के संदर्भ में शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच जटिल और द्विदिशीय संबंध की पड़ताल करता है। यह शोध इस क्षेत्र में मौजूदा विरोधाभासी निष्कर्षों को समझने, इस अंतःक्रिया की जटिलता को उजागर करने और किशोरावस्था की संवेदनशीलता को संबोधित करने की आवश्यकता पर बल देता है। अध्ययन दर्शाता है कि उच्च आत्म-सम्मान बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा दे सकता है, जबकि शैक्षणिक सफलता बदले में आत्म-सम्मान को बढ़ाती है। इस संबंध में शैक्षणिक जुड़ाव की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया है, जहाँ आत्म-सम्मान एक प्रेरक के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, माता-पिता और शिक्षकों की संयुक्त भूमिका, सकारात्मक वातावरण का निर्माण, यथार्थवादी अपेक्षाएं और प्रभावी संचार, तथा समस्या समाधान के लिए एकीकृत दृष्टिकोण किशोरों के अकादमिक और भावनात्मक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माने गए हैं। यह शोध प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों और साक्ष्य-आधारित नीतियों के विकास की आवश्यकता पर जोर देता है, जो छात्रों के ज्ञान के साथ-साथ उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास को भी बढ़ावा दे सकें।

प्रमुख शब्द (Keywords): शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म-सम्मान, माता-पिता का समर्थन, शैक्षणिक जुड़ाव, किशोर

प्रस्तावना:

आइज़ैक और उनके साथियों (1972) ने किशोरावस्था को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "किशोरावस्था वयसंधि के बाद की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति में आत्म उत्तरदायित्व का स्थापन होता है।"

मानव विकास की चार अवस्थाएँ मानी जाती हैं: बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था। यह विकास शारीरिक, मानसिक और सामाजिक एवं भावनात्मक रूप में होता रहता है। किशोरावस्था सबसे परिवर्तनशील अवधि है। (कुमार ए, 2018) इस अवस्था को व्यक्ति के जीवन की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। इस उम्र में विद्यार्थी समाज के किसी भी इकाई से सकारात्मक या नकारात्मक दोनों ही तरह से आसानीपूर्वक प्रभावित हो जाते हैं। "किशोरावस्था, बड़े संघर्ष, तूफान, तनाव तथा विरोध की अवस्था है (स्टेनले, 1904)।" रॉस के शब्दों में "किशोर का जीवन बहुत अधिक संवेगात्मक होता है जिसमें हमें एक बार फिर उसके अत्यधिक उग्र और निराशा की गहराइयों के बीच झूलते हुए व्यवहार के माध्यम से मानव व्यवहार के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों पक्षों का ही मिला-जुला रूप देखने को मिलता है।" (रॉस- 1951. पृ. 1947)। अतः यह अभिभावकों, भाई-बहन, पड़ोसी तथा समाज की जिम्मेदारी होती है कि वे किशोरों का व्यक्तित्व प्रभावी तथा आकर्षक बनाने में उनकी सहायता प्रदान करें। यदि किसी विद्यार्थी को सही दिशा में मार्गदर्शन दिया जाए तो उसके अंदर कलात्मक एवं सृजनात्मक कौशल का विकास किया जा सकता है। यही कौशल उस विद्यार्थी में आत्म विश्वास निरूपित करने में सहायक हो सकता है। और



Cover Page



आत्मविश्वास धीरे-धीरे आत्मसम्मान का रूप धारण कर सकता है। (कुमारी-वी, 2022) इस अवस्था में व्यक्ति की आत्म छवि एवं आत्म-सम्मान का निर्माण होता है।

सकारात्मक मनोविज्ञान के विकास के साथ, मानवीय शक्तियों और सकारात्मक मनोवैज्ञानिक गुणों पर व्यापक ध्यान दिया गया है। शोधकर्ताओं ने बर्नआउट के सकारात्मक विपरीत - "संलग्नता" पर ध्यान केंद्रित किया है - जिसे सकारात्मक, संतुष्टिदायक, कार्य-संबंधी मन की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है, जो जोश, समर्पण और अवशोषण की विशेषता है (शॉफ़ेरी और बकर, 2004)। शैक्षणिक जुड़ाव जुड़ाव की अवधारणा को बढ़ाता है, और यह उस डिग्री को संदर्भित करता है जिससे छात्र औपचारिक शिक्षा की प्रक्रिया में शैक्षिक शिक्षण कार्यों (जैसे स्कूल से संबंधित पाठ्यक्रम और सीखने की गतिविधियाँ) में संलग्न होते हैं (जॉर्ज, 2009)। मौजूदा साहित्य बताता है कि उच्च शैक्षणिक जुड़ाव अकादमिक उपलब्धि को बढ़ावा देता है (जॉनसन और सिनात्रा, 2013) , शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करता है (वेफल्ड और डाउनी , 2009) , छात्रों की स्कूल समायोजन क्षमता को बढ़ाता है (वांग इसके विपरीत, किशोरों में कम शैक्षणिक संलग्नता शैक्षणिक असफलता, स्कूल छोड़ने, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, किशोर अपराध और चिंता और अवसाद जैसी नकारात्मक भावनाओं में वृद्धि का कारण बन सकती है (लेस्ली एट अल., 2010 ; ली और लर्नर, 2011)। ग्रिफ़िथ्स और सहकर्मियों [Griffiths, A., et.al.] के अनुसार, कुछ आवश्यक तत्व जो छात्र के जुड़ाव को प्रभावित कर सकते हैं, वे आत्म-सम्मान, आत्म-प्रभावकारिता, अपेक्षाएँ और साथियों के बीच संबंध [Bandura, A.1997] हैं, ये सभी जुड़ाव की गुणवत्ता और स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

शैक्षणिक जुड़ाव, जिसे प्रतिबद्धता भी कहा जाता है (इस शोध में, दोनों शब्दों का उपयोग एक ही अवधारणा को संदर्भित करने के लिए किया जाता है), छात्र को शैक्षिक गतिविधियों के दौरान भाग लेने के लिए प्रेरित करता है [Astin, Tinto1994]। शैक्षणिक जुड़ाव का स्तर न केवल यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा करें, बल्कि यह उन खतरों से ढाल के रूप में भी कार्य करता है जिनका उन्हें युवा लोगों के रूप में सामना करना पड़ता है [Skinner,2008]। बेहतर विश्लेषण के लिए शैक्षणिक जुड़ाव को तीन तत्वों में विभाजित किया गया है: भावनात्मक, व्यवहारिक और संज्ञानात्मक [Fredricks at.,al2004]। यह निर्धारित करने के लिए कि प्रेरणा छात्र की सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी के स्तर को कैसे प्रभावित करती है, यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, जो तब शैक्षणिक लाभ के संदर्भ में परिलक्षित होता है; ऐसा इसलिए है क्योंकि यह साबित हो चुका है कि प्रेरणा शैक्षणिक जुड़ाव को प्रभावित करती है, जो साथ ही शैक्षणिक उपलब्धि में योगदान करती है [Martin, A.J.2017]।

आत्म-सम्मान एक और महत्वपूर्ण कारक है जो शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है; यह प्रासंगिक है क्योंकि यह प्रेरणा और शैक्षणिक उपलब्धि [Bailey, T.H.;2016] से निकटता से संबंधित रहा है। आत्म-सम्मान एक छात्र के आत्म-मूल्य की सकारात्मक या नकारात्मक धारणा को संदर्भित करता है [Rosenberg, M.1979], जो एक छात्र की शैक्षिक कार्यों को पूरा करने या न करने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसलिए, इस कारक को शामिल करना आवश्यक है क्योंकि यह साबित हो चुका है कि यह किसी कार्य को करने से सकारात्मक रूप से जुड़ा है।

यह भी बहुत आम है कि शैक्षणिक प्रदर्शन का मूल्यांकन केवल उन ग्रेडों को देखकर किया जाता है जो छात्र पढ़ाई के दौरान प्राप्त करते हैं, और इसे शिक्षा में सफलता का सुनहरा माप माना जाता है [Stupnisky, R.H.;2013]। यह भी ज्ञात है कि मनोसामाजिक आत्म-सम्मान कारक ग्रेडों को प्रभावित करता है [Peixoto, F.; Almeida, L.S.2010] और यह भावनाओं (भावनात्मक अवस्थाओं) और प्रेरणा के माध्यम से शैक्षणिक प्रदर्शन से निकटता से संबंधित है। [Chen, G.; Gully, S.M.2004] इसलिए, शैक्षणिक भागीदारी पर आत्म-सम्मान के प्रभाव का विश्लेषण करने से अनुभवजन्य प्रमाण मिलेगा जो प्रेरणा के उचित



Cover Page



स्तरों को प्रोत्साहित करने वाली रणनीतियों का प्रस्ताव करने में सक्षम बनाता है, ताकि शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

जो आत्म-सम्मान, प्रेरणा, और शैक्षणिक जुड़ाव के घटकों के प्रभावों को उन कारकों के रूप में खोजता है जो एक छात्र के प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यह शोध इस बात के लिए अनुभवजन्य प्रमाण प्रस्तुत करता है कि आत्म-सम्मान सीखने में छात्र के जुड़ाव के स्तर को कैसे प्रभावित कर सकता है, जो साथ ही, उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में परिलक्षित होता है।

हालांकि, हमने संबंधित साहित्य की समीक्षा की और पाया कि शैक्षणिक जुड़ाव पर शोध आम तौर पर कॉलेज के छात्रों पर केंद्रित रहा है। विशेष रूप से, इसने कक्षा के वातावरण की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया है, जैसे शिक्षक-छात्र संबंध (यांग और लैम्ब, 2014) और सहकर्मी संबंध (फ्रेड्रिक्स एट अल., 2004), और पारिवारिक वातावरण की विशेषताएं, जैसे परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (रैंडोल्फ एट अल., 2006) और पारिवारिक समर्थन (ब्लॉडल और अडालबजारनाडोर्टि, 2014)। व्यक्तिगत विशेषताओं और शैक्षणिक जुड़ाव (ली और ली, 2021) के बीच संबंधों पर बहुत कम शोध फोकस किया गया है। आत्म-सम्मान और आत्म-प्रभावकारिता का शैक्षणिक जुड़ाव पर प्रभाव पड़ने की पुष्टि की गई है, लेकिन इन दोनों कारकों के संबंधित योगदान की पुष्टि करने के लिए या शैक्षणिक जुड़ाव पर उनके संयुक्त प्रभाव पर कोई शोध नहीं है। इसलिए, किशोरों की शैक्षणिक संलग्नता को विनियमित या उसमें हस्तक्षेप करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव का पता लगाना आवश्यक है; परिवार, स्कूल और समाज के सहायक संसाधनों पर पूरी तरह से विचार करना; और किशोरों की शैक्षणिक संलग्नता में सुधार के लिए एक योजना प्रस्तुत करना, जो किशोरों को किशोरावस्था की संवेदनशील और महत्वपूर्ण अवधि को अधिक सुचारू रूप से पार करने में मदद करे

आत्मसम्मान: आत्म-सम्मान मनोविज्ञान में सबसे व्यापक रूप से अध्ययन किया गया विषय है (बाउमिस्टर, 1993; गेबॉयर एट अल., 2008)।

किशोरों में संज्ञानात्मक परिवर्तनों के कारण किशोर की स्वयं के बारे में सोच और अधिक जटिल पर्याप्त रूप से संगठित तथा स्थिर प्रकार की (Consistent) हो जाती है। किशोरावस्था में आत्म प्रत्यय तथा आत्म सम्मान में परिवर्तन किशोर के स्वयं की वैयक्तिक पहचान को आधार प्रदान करते हैं। आत्मसम्मान की आत्म प्रत्यय का एक पक्ष है। (श्रीवास्तव डी.एन. एवं वी.एन. 2013) व्यक्ति के अपने मूल्यों के व्यक्तिपरक मूल्यांकन को आत्मसम्मान कहते हैं। इसमें व्यक्ति की अपनी क्षमताएँ, योग्यताएँ और विफलताएँ शामिल हैं। आत्मसम्मान किसी भी व्यक्ति के सफल जीवन का आधारभूत तत्व है। इसमें व्यक्ति अपनी मौलिक अद्वितीयता की आंतरिक समझ और एक गौरवपूर्ण अनुभूति है। 1970 से 1990 तक छात्रों के आत्म-सम्मान को कई शोधकर्ताओं और चिकित्सकों द्वारा उन विषयों में प्राप्त ग्रेड, अपने साथियों के साथ उनके संबंधों और जीवन में उनकी बाद की सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू माना गया था। मास्लो (1987) की आवश्यकताओं के पदानुक्रम में, उन्होंने अपने सिद्धांत में आत्म-सम्मान पर जोर दिया।

बैरन व बायरनी (2003) ने आत्मसम्मान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला आत्ममूल्यांकन जिसमें वह अपनी स्वयं के प्रति अभिवृत्तियों का मूल्यांकन करता है।" उसका यह मूल्यांकन धनात्मक और ऋणात्मक दो विमा वाला होता है। (जी.एच.मीड, 1934) अनेक अध्ययनों (Tweng and Campwell, 2001; Zimmerman.et.,al., 2003) में पाया गया है कि किशोरावस्था में ज्यादातर किशोरों के आत्मसम्मान में बढ़ोतरी होती है और इसका स्तर ऊँचा बना रहता है। किशोरों आत्मसम्मान से संबंधित शैक्षिक योग्यता, सामाजिक योग्यता, शारीरिक योग्यता,



व्यवसाय संबंधी योग्यता आदि के संबंध में स्वयं के लिए रेखाचित्र बना लेते हैं। (श्रीवास्तव डी.एन. एवं वी.एन., 2013) आत्मसम्मान किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं और मूल्यों के प्रति विश्वासों और दृष्टिकोणों का मूल्यांकन है (रोसेनबर्ग, 1965)।

शैक्षणिक उपलब्धि: अकादमिक उपलब्धि एक ऐसा शब्द है जो विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए संदर्भित करता है। अकादमिक उपलब्धि, जिसे आमतौर पर प्रदर्शन के रूप में संदर्भित किया जाता है। एक छात्र की योग्यता या शैक्षणिक कार्य के किसी विशेष क्षेत्र में सफलता की डिग्री को संदर्भित करता है। अकादमिक सफलता अध्ययन के कई क्षेत्रों में छात्रों की उपलब्धियों का परिणाम है। शैक्षणिक सफलता को चरों द्वारा परिभाषित किया जाता है, जैसे सीखने की क्षमता, सीखने की तत्परता और सीखने का अवसर। छात्र का परिवेश, परिवार, पृष्ठभूमि, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, शौक और अभिरुचि सभी एक भूमिका निभाते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चरों से भी प्रभावित होती है। एक बच्चे के जीवन में उच्च शैक्षणिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उसमें आत्मविश्वास पैदा करता है और उसके समूह के बेहतर आत्मसात करने में सहायता करता है। (सिंह अनिता एंड कमलेश, 2022) ने अपनी शैक्षणिक उपलब्धि का वर्णन करते हुए कहा है, "एक छात्र सीखने के एक निश्चित क्षेत्र का लाभ उठा रहा है, अर्थात् उपलब्धि उस सीमा तक है।" शैक्षणिक उपलब्धि को व्यक्ति की वस्तुनिष्ठ शैक्षणिक सफलता की आत्म-धारणा और आत्म-मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। [Martin, A.J.2017]

आत्म-सम्मान और शैक्षणिक जुड़ाव

आत्म-सम्मान किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं और मूल्यों के प्रति विश्वासों और दृष्टिकोणों का मूल्यांकन है (रोसेनबर्ग, 1965)। किशोरावस्था के दौरान आत्म-सम्मान अस्थिर होता है, क्योंकि किशोरों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में कई बदलाव होते हैं। आत्म-सम्मान प्रारंभिक किशोरावस्था में कम हो जाता है और किशोरावस्था के मध्य और बाद के चरणों में ठीक हो जाता है (ट्रेज़ेस्निएव्स्की एट अल।, 2003)। उच्च स्तर के आत्म-सम्मान वाले किशोरों को सकारात्मक आत्म-अनुभव (पेंग एट अल।, 2019), उच्च-गुणवत्ता वाले पारस्परिक संबंधों (कैमरन और ग्रेंजर, 2019), और बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य (ली एट अल।, 2010) का अनुभव होता है।

एक बुनियादी मनोवैज्ञानिक संरचना के रूप में, आत्म-सम्मान शैक्षणिक जुड़ाव के लिए एक प्रेरक के रूप में काम कर सकता है (लिम और ली, 2017)। अपेक्षा-मूल्य सिद्धांत बताता है कि व्यक्तियों का सकारात्मक आत्म-मूल्यांकन शैक्षणिक परिणामों, जैसे शैक्षणिक जुड़ाव, का पूर्वानुमान लगा सकता है (फेंग, 2016)। सिरिन और रोजर्स-सिरिन (2015) के एक अध्ययन से पता चला है कि आत्म-सम्मान ने शैक्षणिक जुड़ाव से संबंधित क्षेत्रों को प्रभावित किया है, और आत्म-सम्मान और शैक्षणिक जुड़ाव के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है। फिलिपेलो एट अल. (2019) के शोध आंकड़ों से पता चला है कि आत्म-सम्मान किसी व्यक्ति के शैक्षणिक जुड़ाव के स्तर का अनुमान लगा सकता है। इस प्रकार, हम निम्नलिखित परिकल्पना का प्रस्ताव करते हैं:

प्रत्यक्ष सामाजिक समर्थन, शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षणिक जुड़ाव

हालांकि आत्म-सम्मान किशोरावस्था में शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता के माध्यम से शैक्षणिक जुड़ाव को प्रभावित कर सकता है, लेकिन यह प्रभाव व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न होता है। प्रत्यक्ष सामाजिक समर्थन से तात्पर्य व्यक्ति की भावनाओं और परिवार, दोस्तों और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्राप्त समर्थन की डिग्री के मूल्यांकन से है (ज़िमेट एट अल।, 1988)। सामाजिक अधिगम सिद्धांत (बंडूरा, 1977) बताता है कि दूसरों का मार्गदर्शन, अपेक्षाएं और समर्थन एक व्यक्ति की आत्म-प्रभावकारिता को प्रभावित करेगा। शैक्षणिक जुड़ाव व्यक्तिगत विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन यह लचीला है और



Cover Page



2277-7881



हमेशा स्वतः नहीं होता है। जब व्यक्ति उच्च स्तर के बाहरी समर्थन और अपेक्षाओं को महसूस करते हैं, तो उनकी सकारात्मक सीखने की प्रेरणा उत्तेजित हो सकती है (गेटेंस एट अल।, 2018), और इस सीखने की प्रेरणा की शक्ति का छात्रों के शैक्षणिक जुड़ाव पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है (लियू एट अल।, 2009)।

हालांकि, मौजूदा साहित्य में प्रत्यक्ष सामाजिक समर्थन का शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता पर पड़ने वाले प्रभाव के तंत्र की पड़ताल का अभाव है। मौजूदा अध्ययनों से पता चला है कि प्रत्यक्ष सामाजिक समर्थन आत्म-प्रभावकारिता और सीखने के लक्ष्यों के बीच संबंधों को नियंत्रित कर सकता है (बागसी, 2016): प्रत्यक्ष सामाजिक समर्थन के उच्च स्तर के मामले में, छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता सीखने के लक्ष्यों की प्रभावी ढंग से भविष्यवाणी कर सकती है, और सीखने के लक्ष्यों की स्थापना छात्रों के शैक्षणिक जुड़ाव के लिए अनुकूल है (किंग एट अल।, 2013)। ऊपर वर्णित अध्ययनों के समान, हम निम्नलिखित की अपेक्षा करते हैं:

माता-पिता और शिक्षकों की संयुक्त भूमिका

जब माता-पिता और शिक्षक मिलकर काम करते हैं, तो वे एक मजबूत समर्थन प्रणाली बनाते हैं जो किशोरों को अकादमिक और भावनात्मक रूप से सफल होने में मदद करती है।

• निरंतर प्रोत्साहन और समर्थन:

- मिश्रा (2015) जैसे अध्ययनों ने दर्शाया है कि **माता-पिता और शिक्षकों दोनों का प्रोत्साहन** किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता-पिता और शिक्षक एक ही लक्ष्य की दिशा में काम कर रहे हैं, तो उन्हें अधिक सुरक्षित और समर्थित महसूस होता है। फरहमान, कीथ और शीमरस (2015) के शोध ने भी माता-पिता की भागीदारी के महत्व को रेखांकित किया है, जो शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन और उनके व्यक्तिगत संबंधों को बेहतर बनाती है [Farahman, Keith & Scheerens, 2015, जैसा कि **Ignited.in** में उद्धृत है]।
- **स्पष्टीकरण:** एक किशोर के लिए, यह समझना कि घर और स्कूल दोनों जगह से उसे समान रूप से समर्थन मिल रहा है, उसके **आत्म-सम्मान** को बढ़ावा देता है। जब शिक्षक छात्रों को प्रेरित करते हैं और माता-पिता घर पर उस प्रेरणा को बनाए रखते हैं, तो शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करना आसान हो जाता है, जिससे उनकी **शैक्षणिक उपलब्धि** बढ़ती है।

• सकारात्मक वातावरण का निर्माण:

- **शोध:** दिल्ली विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों का सकारात्मक व्यवहार और कक्षा का माहौल छात्रों के **आत्म-सम्मान** में सुधार करता है, जिसका सीधा असर उनके अकादमिक प्रदर्शन पर पड़ता है। इसी तरह, माता-पिता द्वारा घर पर बनाया गया पोषणकारी और सहायक वातावरण किशोरों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है [International Journal of Indian Psychology, Vol. 8, Issue 4, 2021]।
- **स्पष्टीकरण:** जब स्कूल में एक सहायक कक्षा वातावरण और घर पर एक प्यार भरा, समझने वाला माहौल होता है, तो किशोर अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। यह समग्र सकारात्मक वातावरण उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने में मदद करता है, गलतियाँ करने से नहीं डरने देता, और सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उनके **आत्म-सम्मान** और **शैक्षणिक उपलब्धि** दोनों में वृद्धि होती है।

• यथार्थवादी अपेक्षाएं और प्रभावी संचार:

- **शोध:** बाजवा (2006) के अध्ययन में अकादमिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण और अकादमिक तनाव के बीच संबंध पाया गया, जो माता-पिता और शिक्षकों दोनों के लिए अपेक्षाएं निर्धारित करते समय सहयोगात्मक होने की आवश्यकता पर बल देता है [Bajwa, 2006, जैसा कि **IJIP** में उद्धृत है]।



- **स्पष्टीकरण:** माता-पिता और शिक्षकों के बीच नियमित संचार से किशोर की प्रगति, चुनौतियों और आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। जब दोनों पक्ष मिलकर यथार्थवादी अकादमिक अपेक्षाएं निर्धारित करते हैं और बच्चे की क्षमताओं के अनुरूप लक्ष्य बनाते हैं, तो किशोर को सफलता की अधिक संभावना महसूस होती है, जिससे उसकी निराशा कम होती है और **आत्म-सम्मान** बना रहता है। यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे को सही समय पर सही तरह का समर्थन मिले।
- **समस्या समाधान और सहायता:**
- **शोध:** एक व्यवस्थित समीक्षा (2023) में पाया गया कि माता-पिता का समर्थन किशोरों की आत्म-सम्मान और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी तरह, शिक्षक उन छात्रों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है [International Journal of Psychology Research, 2023]।
- **स्पष्टीकरण:** यदि कोई किशोर अकादमिक या भावनात्मक रूप से संघर्ष कर रहा है, तो माता-पिता और शिक्षकों का संयुक्त दृष्टिकोण समस्या की जड़ को पहचानने और प्रभावी समाधान खोजने में मदद कर सकता है। चाहे वह अतिरिक्त ट्यूशन हो, परामर्श हो, या सीखने की रणनीतियों में बदलाव हो, यह एकीकृत दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि किशोर को उसकी चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक समग्र सहायता मिले, जिससे उसका **आत्म-सम्मान** और **शैक्षणिक उपलब्धि** दोनों प्रभावित होते हैं।

शोध आवश्यकता

शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच संबंधों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता कई महत्वपूर्ण कारणों से पैदा हुई, खासकर किशोरों के संदर्भ में। यह सिर्फ एक अकादमिक जिज्ञासा नहीं है, बल्कि इसके गहन व्यावहारिक और नीतिगत निहितार्थ भी हैं।

1. विरोधाभासी परिणामों को समझना (Understanding Contradictory Findings)

पिछले शोधों में शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच संबंधों पर अक्सर विरोधाभासी परिणाम सामने आए हैं। कुछ अध्ययनों में एक मजबूत सकारात्मक संबंध पाया गया, तो कुछ में कमजोर या कोई संबंध नहीं। वहीं, कुछ शोधों ने यह भी सुझाव दिया कि यह संबंध लिंग, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या यहां तक कि विशिष्ट शैक्षणिक संदर्भों के अनुसार भिन्न हो सकता है। ऐसे में, एक विश्लेषणात्मक अध्ययन इन विभिन्न निष्कर्षों का संश्लेषण कर सकता है, उनके पीछे के कारणों की पहचान कर सकता है, और अधिक स्पष्ट तस्वीर पेश कर सकता है।

2. द्विदिशीय संबंध की जटिलता (Complexity of the Bidirectional Relationship)

यह एक चिर-परिचित प्रश्न है कि क्या उच्च आत्म-सम्मान बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की ओर ले जाता है, या शैक्षणिक सफलता आत्म-सम्मान को बढ़ाती है। अधिकांश आधुनिक दृष्टिकोण यह मानते हैं कि यह एक **द्विदिशीय संबंध** है, जहाँ दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। इस जटिल अंतःक्रिया को गहराई से समझने के लिए विश्लेषणात्मक शोध की आवश्यकता होती है। यह समझने में मदद करता है कि कौन सा कारक किस हद तक दूसरे को प्रभावित करता है, और क्या यह प्रभाव किसी तीसरे चर (जैसे प्रेरणा, माता-पिता का समर्थन, या स्कूल का माहौल) द्वारा संचालित होता है।



Cover Page



3. किशोरावस्था की संवेदनशीलता (Vulnerability of Adolescence)

किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण है जहाँ पहचान का निर्माण होता है और स्वयं की भावना मजबूत होती है। इस दौरान किशोरों को शैक्षणिक दबावों, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। कम आत्म-सम्मान इस अवधि में न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं (जैसे चिंता, अवसाद) और व्यवहार संबंधी मुद्दों (जैसे स्कूल छोड़ना, असामाजिक व्यवहार) को भी जन्म दे सकता है। इसलिए, इस महत्वपूर्ण आयु वर्ग में इस संबंध का अध्ययन करके हस्तक्षेप के लिए महत्वपूर्ण बिंदु पहचाने जा सकते हैं।

4. प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों का विकास (Developing Effective Educational Interventions)

यदि आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक स्पष्ट और समझने योग्य संबंध स्थापित हो जाता है, तो यह शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं और माता-पिता को अधिक प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित करने में मदद करेगा।

- यदि कम आत्म-सम्मान खराब शैक्षणिक प्रदर्शन का कारण बनता है, तो स्कूलों को आत्म-सम्मान बढ़ाने वाले कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- यदि शैक्षणिक सफलता आत्म-सम्मान को बढ़ाती है, तो प्रारंभिक शैक्षणिक सहायता प्रदान करना किशोरों के आत्मविश्वास के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ऐसे कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को मापने और सुधारने में मदद कर सकता है शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच संबंध विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्न हो सकता है। भारत जैसे विविध देश में, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के छात्र हैं, एक विश्लेषणात्मक अध्ययन यह समझने में मदद कर सकता है कि ये कारक इस संबंध को कैसे संशोधित करते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि शैक्षिक रणनीतियाँ सभी छात्रों के लिए प्रासंगिक और प्रभावी हों।

6. साक्ष्य-आधारित नीतियों का निर्माण (Formulating Evidence-Based Policies)

शैक्षणिक नीतियों और पाठ्यचर्या के विकास के लिए ठोस शोध साक्ष्य आवश्यक हैं। यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए साक्ष्य-आधारित नीतियों के निर्माण में योगदान कर सकता है, जो न केवल छात्रों के ज्ञान को बढ़ाते हैं बल्कि उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास को भी बढ़ावा देते हैं।

संक्षेप में, शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच संबंध पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता इसलिए पड़ी ताकि इस जटिल अंतःक्रिया को बेहतर ढंग से समझा जा सके, विरोधाभासी शोध निष्कर्षों को सुलझाया जा सके, किशोरों के समग्र विकास को बढ़ावा दिया जा सके और अंततः अधिक प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेपों और नीतियों को तैयार किया जा सके। यह अध्ययन हमें छात्रों के केवल "क्या सीखते हैं" से आगे बढ़कर "वे कैसा महसूस करते हैं" और "वे स्वयं को कैसे देखते हैं" को समझने में मदद करता है।

निष्कर्ष:

यहां शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच संबंध पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष दिए गए हैं, विशेष रूप से किशोरों के संदर्भ में:



Cover Page



यह अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि और आत्म-सम्मान के बीच जटिल और द्विदिशीय संबंध को समझने की आवश्यकता पर जोर देता है, खासकर किशोरावस्था की संवेदनशील अवधि के दौरान। शोध से पता चलता है कि उच्च आत्म-सम्मान बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा दे सकता है, और शैक्षणिक सफलता बदले में आत्म-सम्मान को बढ़ा सकती है। यह अंतःक्रिया विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिसमें प्रेरणा, माता-पिता और शिक्षकों का समर्थन, और स्कूल का माहौल शामिल है।

किशोरों में, आत्म-सम्मान में परिवर्तन आत्म-पहचान के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह देखा गया है कि किशोरावस्था में आत्म-सम्मान बढ़ता है और उच्च स्तर पर बना रहता है⁵। सकारात्मक आत्म-सम्मान वाले किशोर बेहतर आत्म-अनुभव, उच्च-गुणवत्ता वाले पारस्परिक संबंध और बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का अनुभव करते हैं।

शैक्षणिक जुड़ाव, जिसे प्रतिबद्धता के रूप में भी जाना जाता है, छात्र की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण है। उच्च शैक्षणिक जुड़ाव शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देता है और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करता है, जबकि कम जुड़ाव शैक्षणिक विफलता और नकारात्मक भावनाओं को जन्म दे सकता है। आत्म-सम्मान शैक्षणिक जुड़ाव के लिए एक प्रेरक के रूप में कार्य करता है, और दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया गया है।

माता-पिता और शिक्षकों के बीच संयुक्त भूमिका किशोरों के अकादमिक और भावनात्मक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। उनका निरंतर प्रोत्साहन और समर्थन शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। एक सकारात्मक कक्षा और घरेलू वातावरण छात्रों के आत्म-सम्मान को बढ़ाता है, जिससे अकादमिक प्रदर्शन में सुधार होता है। यथार्थवादी अपेक्षाएं और प्रभावी संचार निराशा को कम करने और आत्म-सम्मान बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, अकादमिक या भावनात्मक संघर्षों का समाधान करने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण आवश्यक सहायता प्रदान करता है, जिससे आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि दोनों प्रभावित होते हैं।

यह शोध इस क्षेत्र में विरोधाभासी निष्कर्षों को समझने, द्विदिशीय संबंध की जटिलता को उजागर करने, किशोरावस्था की संवेदनशीलता को संबोधित करने और प्रभावी शैक्षिक हस्तक्षेप और साक्ष्य-आधारित नीतियों को विकसित करने के लिए एक विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। अंततः, यह छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन के साथ-साथ उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

(संदर्भ) REFERENCES:

1. Mead, G.H. (1934). *Mind, Self, and Society*. Chicago: University of Chicago Press.
2. Ross, J.S. (1951). *Groundwork of Educational Psychology*. London: George G. Harrap.
3. D.N. Srivastava (2013). *Modern Developmental Psychology* Department, Agra College (Dr. Bhimrao Ambedkar), Publication Shri Vinod Pustak.
4. Rosenberg, M. (2015). *Society and the Adolescent Self-image*. Princeton University Press.
5. Kumar, A. (2018). (A Study of Correlation between Stress and Academic Achievement in Adolescents) IJCRT, Vol 6(1), pp. 800-803.
6. Cheema, G.K. & Bhardwaj M: (2021). Study of Self Esteem and Academic Achievement in relation to Home Environment among Adolescents. *European Journal of Molecular and Clinical Medicine*, 8(1), 1978-87.
7. Kumari, V. (2022). Ph.D. Scholar, St. Xavier's College of Education, Patna. *International Journal of Novel Research and Development (IJNRD)* (Self-Esteem and Academic Achievement of Secondary School Students).



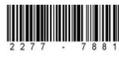
Cover Page



8. Singh A. & Singh K. (2022). (Adjustment and Academic Achievement of Adolescent Boys and Girls) Vol-19(5), pp. 147-152.
9. Schaufeli, W. B., and Bakker, A. B. (2004). Job demands, job resources, and their relationship with burnout and engagement: a multi-sample study. *J. Organ. Behav.* 25, 293–315. doi: 10.1002/job.248
10. Niemiec, C. P., and Ryan, R. M. (2009). Autonomy, competence, and relatedness in the classroom: applying self-determination theory to educational practice. *Theory Res. Educ.* 7, 133–144. doi: 10.1177/1477878509104318
11. George, D. K. (2009). What student affairs professionals need to know about student engagement? *J. Coll. Stud. Dev.* 50, 683–706. doi: 10.1353/csd.0.0099
12. Johnson, M. L., and Sinatra, G. M. (2013). Use of task-value instructional inductions for facilitating engagement and conceptual change. *Contemp. Educ. Psychol.* 38, 51–63. doi: 10.1016/j.cedpsych.2012.09.003
13. Wefald, A. J., and Downey, R. G. (2009). Construct dimensionality of engagement and its relation with satisfaction. *J. Psychol.* 143, 91–112. doi: 10.3200/JRLP.143.1.91–112
14. Wang, M.-T., and Fredricks, J. A. (2014). The reciprocal links between school engagement, youth problem behaviors, and school dropout during adolescence. *Child Dev.* 85, 722–737. doi: 10.1111/cdev.12138
15. Leslie, L. K., James, S., Monn, A., Kauten, M. C., Zhang, J., and Aarons, G. (2010). Health-risk behaviors in young adolescents in the child welfare system. *J. Adolesc. Health* 47, 26–34. doi: 10.1016/j.jadohealth.2009.12.032
16. Li, Y., and Lerner, R. M. (2011). Trajectories of school engagement during adolescence: implications for grades, depression, delinquency, and substance use. *Dev. Psychol.* 47, 233–247. doi: 10.1037/a0021307
17. Blackwell, L. S., Trzesniewski, K. H., and Dweck, C. S. (2007). Implicit theories of intelligence predict achievement across an adolescent transition: a longitudinal study and an intervention. *Child Dev.* 78, 246–263. doi: 10.1111/j.1467-8624.2007.00995.x
18. Sahin, C. (2014). An analysis of the relationship between internet addiction and depression levels of high school students. *Particip. Educ. Res.* 1, 53–67. doi: 10.17275/per.14.10.1.2
19. Wang, C. (2004). A critical reflection on the thought of “despising knowledge” in Chinese basic education. *Peking Univ. Educ. Rev.* 2, 5–23. doi: 10.19355/j.cnki.1671-9468.2004.03.002
20. Christenson, S. L., Reschly, A. L., and Wylie, C. (2012). *Handbook of Research on Student Engagement*. Boston, MA: Springer.
21. Yang, P.-J., and Lamb, M. E. (2014). Factors influencing classroom behavioral engagement during the first year at school. *Appl. Dev. Sci.* 18, 189–200. doi: 10.1080/10888691.2014.924710
22. Fredricks, J. A., Blumenfeld, P. C., and Paris, A. H. (2004). School engagement: potential of the concept, state of the evidence. *Rev. Educ. Res.* 74, 59–109. doi: 10.3102/00346543074001059
23. Randolph, K. A., Fraser, M. W., and Orthner, D. K. (2006). A strategy for assessing the impact of time varying family risk factors on high school dropout. *J. Fam. Issues* 27, 933–950. doi: 10.1177/0192513X06287168
24. Blondal, K. S., and Adalbjarnardottir, S. (2014). Parenting in relation to school dropout through student engagement: a longitudinal study. *J. Marriage Fam.* 76, 778–795. doi: 10.1111/jomf.12125
25. Li, X., and Li, Y. (2021). Empirical research on foreign learning engagement based on systematic literature review. *Mod. Distance Educ. Res.* 33, 73–83. doi: 10.3969/j.issn.1009-5195.2021.02.008
26. Rosenberg, M. (1965). *Society and the Adolescent Self-Image*. Princeton, NJ: Princeton University Press.
27. Bandura, A. (1997) - "Self-Efficacy: The Exercise of Control."
28. Astin, A.W. (1994) - "Student Involvement: A Developmental Theory for Higher Education."



Cover Page



29. Tinto, V. (1975) - "Dropout from Higher Education: A Theoretical Synthesis of Recent Research."
30. Skinner, E.A., Furrer, C., Marchand, G., Kindermann, T. (2008) - "Engagement and Disaffection in the Classroom: Part of a Larger Motivational Dynamic?"
31. Martin, A.J., Ginnis, P. (2017) - "Motivation and Engagement: Same or Different? Does it Matter? Learn."
32. Bailey, T.H., Phillips, L.J. (2016) - "The Influence of Motivation and Adaptation on Students' Subjective Well-Being, Meaning in Life and Academic Performance."
33. Rosenberg, M. (1979) - "Conceiving the Self."
34. Stupnisky, R.H., Perry, R.P., Renaud, R.D., Hladkyj, S. (2013) - "Looking beyond Grades: Comparing Self-Esteem and Perceived Academic Control as Predictors of First-Year College Students' Well-Being."
35. Chen, G., Gully, S.M., Eden, D. (2004) - "General Self-Efficacy and Self-Esteem: Toward Theoretical and Empirical Distinction between Correlated Self-Evaluations."
36. Baumeister, R. F. (1993). Understanding the Inner Nature of Self-Esteem. R.F.
37. Zimet, G. D., Dahlem, N. W., Zimet, S. G., & Farley, G. K. (1988). Multidimensional Scale of Perceived Social Support. *Journal of Personality Assessment*, 52, 30–41. doi: 10.1207/s15327752jpa5201_2
38. Getens, K. M., Noémie, C., Koestner, R., Powers, T. A., & Gorin, A. A. (2018). The role of partner autonomy support in motivation, well-being, and weight loss in women with high baseline BMI. *Fam. Syst. Health*, 36, 347–356. doi: 10.1037/fsh0000362
39. Peixoto, F.; Almeida, L.S. Self-Concept, Self-Esteem and Academic Achievement: Strategies for Maintaining Self-Esteem in Students Experiencing Academic Failure. *Eur. J. Psychol. Educ.* 2010, 25, 157-175 {Google Scholar}